शेख़ फ़रीद – सबद ९५

कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥

सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥
जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥९२॥

सार: भौतिक संसार लगातार हमारी चेतना को अनंत मांगों और भटकावों से बाहरी दुनिया की ओर खींचता रहता है जिससे हमारी अंतरात्मा और आंतरिक स्पष्टता क्षीण होती जाती है। इससे हम बाहरी रूप से जीवंत तो दिखते हैं लेकिन भीतर से खोखला महसूस करते हैं। हम न केवल अपनी शांति खोते हैं बल्कि अपने गहरे, वास्तविक स्वरूप से भी हमारा संबंध टूटने लगता है। चुनौती यह है कि हम अपनी आंतरिक चेतना को उन क्षणिक और खोखली मांगों से बचाकर रखें जो अत्यावश्यक प्रतीत होती हैं लेकिन अक्सर खोखली होती हैं। सच्ची संतुष्टि के लिए अपने आंतरिक जीवन को प्राथमिकता देना आवश्यक है।

कागा चूंडि न पिंजरा बसै त उडरि जाहि ॥
कौए, इस अस्थि-पिंजर को चोंच से मत नोचो, अगर तुम रहना चाहते हो तब यहाँ से उड़ जाओ। यहाँ अस्थि-पिंजर का कंकाल अहंकार और पहचान के क्षय का प्रतीक है जबकि कौआ हमारी आध्यात्मिक ऊर्जा को सोखने वाली भौतिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करता है।

जितु पिंजरै मेरा सहु वसै मासु न तिदू खाहि ॥९२॥
मेरे प्रिय सर्वव्यापी सार का वास इस पिंजर में है, इसका मांस मत खा। यह उस विवेक का प्रतीक है जो सत्य को स्वीकार कर, अज्ञानता का दृढ़तापूर्वक विरोध करता है। (९२)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद यह गहन सच्चाई बताते हैं कि जीवन के अंतिम चरण में भी आत्म-जागरण की संभावना बनी रहती है। इस संभावना को संसार की कठोर मांगों से बचाना आवश्यक है क्योंकि यही वास्तविक ज्ञान की कुंजी है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com